केदारनाथ अग्रवाल के काव्य में सौंदर्य-बोध (बी.ए. हिंदी प्रतिष्ठा द्वितीय वर्ष, पत्र-चार)

(डॉ. बिभा कुमारी, विश्वेश्वर सिंह जनता महाविद्यालय, राजनगर)

केदारनाथ अग्रवाल प्रगतिवादी कवियों में महत्वपूर्ण स्थान रखते हैं। प्रगतिशील काव्य-आंदोलन से जुड़े रहे हैं। प्रगतिशील भावना के कवि होते हुए भी अपनी रचनाओं में इन्होंने सौंदर्य-बोध का जो रूप उपस्थित किया है वह इनकी अपनी ही विशेषता है। भाव, विचार, अनुभूति को हृदय के भीतरी किनारे से लेकर अपनी कविता में उतरते हैं और वह भी शिल्प की अनूठी सुंदरता के साथ। प्रगतिशील काव्य में भाव-पक्ष की प्रबलता के कारण शिल्प उपेक्षित होने लगा था परंतु कवि केदारनाथ की कविताओं में प्रगतिशील चिंतन और प्रगतिशील चेतना उनके सम्पूर्ण सौंदर्य-बोध को लिए हुए भाव और शिल्प को रखते हुए चित्रित हुआ है। प्रगतिवादी काव्य में कलात्मक शिल्प का ऐसा सुंदर प्रयोग इनके काव्य की विशिष्ट पहचान है। जीवन के छोटे-छोटे अनुभव भी इनके काव्य में पूर्ण जीवंत हुए हैं। कवि की दृष्टि हर छोटी-बड़ी घटना, अनुभव, अनुभूति आदि को अपने काव्य के विषय-क्षेत्र के अंतर्गत देखती है। जीवन के प्रति सकारात्मक भाव और उसमें सौंदर्य की उपस्थिति इनकी कवि-दृष्टि की पहचान है। इनके काव्य में ग्रामीण, नगरीय और महानगरीय चित्र हैं। इस जीवन के हर संदर्भ को कवि अपनी कविताओं में चित्रित करते हैं और इस तरह 'जहाँ न पहुँचे रवि वहाँ पहुँचे कवि' इस उक्ति को चरितार्थ करते हैं। कवि शमशेर बहादुर सिंह ने कहा है-

"आज के साहित्य की नकारात्मक, नैराश्यपूर्ण फ़िजां में केदार का स्वर एक ऐसे सजग मध्यमवर्गीय बुद्धिजीवी का है, जो श्रम से, कर्मठता से, किसान और श्रमिक की अंततोगत्वा एकजुट जीवंतता से- जो प्रकृत्यावश कभी हार मानना नहीं चाहती और साथ ही शक्तिगर्भा प्रकृति के सौंदर्य-नैकट्य और बंधुत्व से और इन सबसे उपलब्ध अपने दुर्दमनीय आशावाद से जीवन जीने की प्रेरणा ले रहा है और दूसरों को दे रहा है।"

केदारनाथ अग्रवाल की कविताओं में सौंदर्य-बोध सर्वत्र उपस्थित है। प्रकृति से मानव का सहज जुड़ाव है। मानव जीवन, मानव जीवन की रागात्मकता, प्रकृति के विविध रूप, जीवन की विविध अनुभूति कवि केदारनाथ की कविताओं की ऐसी विशेषताएँ हैं जो अन्यत्र दुर्लभ हैं। प्रकृति इनके काव्य में आलंबन और उद्दीपन रूपों में तो आई ही है पर इसके साथ-साथ प्रतीक, बिम्ब बनकर भी काव्य के सौंदर्य और प्रभाव को बढ़ाने में सहायक सिद्ध हुई है। प्रकृति का मानवीकरण केदारनाथ जिस जीवंतता से करते हैं वह पाठकों को दूसरी ही दुनिया में ले जाती है। यथा-

"धूप चमकती है चाँदी की साड़ी पहने, मायके में आई बिटिया की तरह मगन है।"

या फिर "हवा हूँ हवा मैं बसंती हवा हूँ।"

कवि प्रकृति के अवयवों के साथ अपने मनोभावों को पूर्णतः एक कर लेते हैं। केदारनाथ के काव्य में सौंदर्य-बोध की ऐसी सजीव अभिव्यक्ति का यह भी एक प्रमुख कारण है। उन्होंने मानव और प्रकृति के सौंदर्य का जैसा मनभावन दृश्य स्थान-स्थान पर उपस्थित किया है, वह उनकी काव्यकला का अनुपम स्वरूप उपस्थित करता है। उन्होंने सहज, वेगवान और उन्मुक्त रूप में प्रकृति और मानव के सौंदर्य का चित्रण किया है। 'माझी न बजाओ वंशी', 'बसंती हवा' आदि कविताएँ प्रगतिवादी कविता का एक भिन्न रूप पाठकों के समक्ष उपस्थित करती है। केदारनाथ की इन कविताओं को विद्वानों ने प्रगतिकालीन सहज सौन्दर्यवादी कविताएँ कहा है। इन कविताओं में प्रगतिकालीन काव्य

का व्यापक दायरा देखा जा सकता है। कवि केदारनाथ अपने भावों को प्रकृति से कुछ इस तरह जोड़ लेते हैं कि पाठक उस अपनत्व भाव को महसूस करने लगता है।उदाहरण के लिए निम्नलिखित पंक्तियों को देखा जा सकता है-

“आज नदी बिल्कुल उदास थी,

सोई थी अपने पानी में,

उसके दर्पण पर,

बादल का वस्त्र पड़ा था,

मैंने उसको नहीं जगाया

दबे पाँव वापस घर आया।“

केदारनाथ मानव और प्रकृति के आपसी संबंधों को बेहद सूक्ष्मता से अनुभव करते हैं। यही कारण है कि मानव और प्रकृति को एक साथ पूर्ण जीवंत रूप में उपस्थित करते है। विद्वानों ने इन्हें मूलतः मानव और प्रकृति का कवि माना है। इनकी कविताओं में सर्वत्र प्रकृति और मानव जीवन का सुंदर, सहज एवं प्रभावशाली चित्रण हुआ है। इनकी कविताएँ प्रगतिशील चेतना सम्पन्न हैं तथापि छायावाद युग जैसा प्रकृति चित्रण इनकी कविताओं को विशेष कोमल-कमनीय रूप प्रदान करता है। इनका काव्य-संग्रह ‘युग की गंगा’ यथार्थवादी चेतना सम्पन्न रचनाओं का संकलन है। इसमें बुंदेलखंड की प्रकृति का अत्यंत सजीव चित्रण हुआ है। किसान का जीवन कठिन संघर्षों के मध्य भी जीवन ढूंढ लेता है। किसान जीवन के उस सौंदर्य-बोध और जिजीविषा भाव का चित्रण करने में कवि सफल रहे हैं। किसान के जीवन अनुभवों के साथ-साथ कवि ने अपने जीवन अनुभवों को भी स्वर दिया है। कवि का दूसरा काव्य-संग्रह ‘लोक और आलोक’ भी अत्यंत महत्वपूर्ण संग्रह है। इसमें कवि लोकगीतों की धुनों, शब्दावली और भावभूमि को स्पर्श करते हुए अपनी कविताओं में अनेक रूपों में सशक्त अभिव्यंजना करने में सफल रहे हैं। कवि का तीसरा काव्यसंग्रह ‘फूल नहीं रंग बोलते हैं’ प्रकृति और सौंदर्य के वर्णनों से भरा हुआ है। यह संग्रह उनकी काव्यकला के चरमोत्कर्ष का साक्षात उदाहरण है। ‘नदी उदास थी’ कविता इसी संग्रह में संकलित है। यह कविता जीवन के प्रति नवीन चेतना का संचार करती है। मनुष्य को अतिसंवेदनशील बनाने की दिशा में यह कविता एक सार्थक कदम है। केदारनाथ यथार्थ, वास्तविकता और बहिर्जगत को बखूबी समझा है, परंतु इनका चित्रण करते हुए वे अपने सौंदर्य-बोध और कोमल अनुभूतियों की उपेक्षा कदापि नहीं करते हैं। यही कारण है कि उनकी काव्यकला प्रगतिवादी कवियों के मध्य अपनी विशिष्ट पहचान रखते हैं। इनकी कविताएँ छायावादी वायवीयता और अमूर्तता के स्थान पर मूर्त रूप में पाठकों के समक्ष उपस्थित होती है और संवाद करती हैं। अपने सौंदर्य-बोध में ये अनुपम हैं, छंदों के सुंदरतम रूप को अंगीकार करती हुई किसानों और श्रमिकों के जीवन को चित्रित करती है। कहीं भी कल्पना का आधिक्य नहीं होने देती है अपितु यथार्थ को सौंदर्य-बोध के साथ सुंदर रूप प्रदान करती है।